अमर चित्र कथा

तानसेन

संगीत मणी

Vol 552 | ₹90

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी १० करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
डॉली रिज़वी	युसुफ बँगलोरवाला	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted January 2023
ISBN 978-93-90055-70-8

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

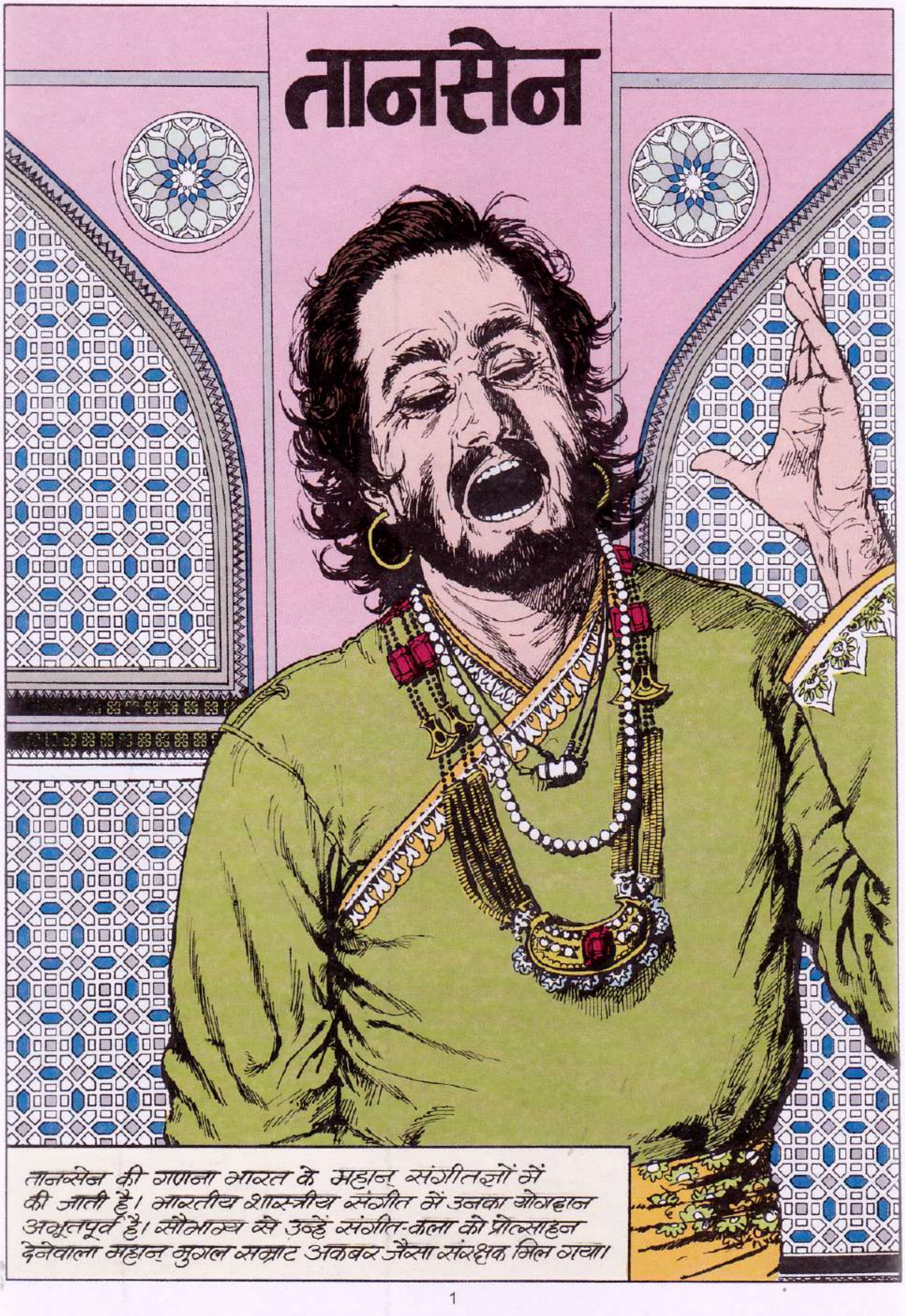
तानसेन
तानसेन की गणना भारत के महान् संगीतज्ञों में की जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनका योगदान अभूतपूर्व है। सौभाग्य से उन्हें संगीत-कला को प्रोत्साहन देनेवाला महान् मुगल सम्राट अकबर जैसा संरक्षक मिल गया।

ग्वालियर के निकट छोटे से कस्बे बेहट में मुकुन्द-राम मिश्र नाम के एक गायक रहते थे। वह धनी तो थे ही, लोकप्रिय भी थे। किन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी।
बच्चों की किलकारी के बगैर यह घर निर्जीव-सा लगता है!
काश! हमारी एक सन्तान होती...
दिवाली की शुभकामनाएँ मिश्र जी!
शुभ-कामनाएँ आपके लिए, न कि हमारे वीरान घर के लिए!
मिश्र जी निराश न हों। आप ग्वालियर के मोहम्मद गौस के पास आशीर्वाद के लिए क्यों नहीं जाते? हो सकता है आपकी मनोकामना पूर्ण हो।
अगले ही दिन मिश्र मोहम्मद गौस के पास पहुँचे।
लो, यह पवित्र ताबीज, अपनी पत्नी की बाँह में बाँध देना। इससे तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी।

कुछ ही समय पश्चात् मिश्र के यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ।
ज़रा सुनो– इसके रोने में भी कितना सुरीलापन है!
बच्चा बहुत प्यारा है न?
इसे हम रामतनु या तन्ना कह कर पुकारेंगे।
मेरे विचार में तानसेन अधिक अच्छा लगेगा।
पूरा कस्बा मिश्र जी को बधाइयाँ देने आया। उनके नौकर आगन्तुकों को मिठाई बाँटने में ही व्यस्त रहे।

* HINDI VOWELS.

एक दिन प्रसिद्ध गायक स्वामी हरिदास अपने शिष्यों सहित बेहट के निकट से गुजर रहे थे। थके होने के कारण उन्होंने जंगल में एक खुली जगह में डेरा डाला।
इन थके-माँदे यात्रियों को डराने में बड़ा मज़ा आयेगा।
गुर्र..र... गुर्र..र..र..र गुर्र..गुर्र..गुर्र गुर्र..र..र...
गुर्र...र..र!. गुर्र..र..र..र!
बचाओ! बचाओ! शेर!
हाय राम!
आश्चर्य है कि दहाड़ने की आवाज़ पास ही से आ रही है किन्तु शेर कहीं दिखाई नहीं दे रहा है।
साहस रखो... डरो मत... कहाँ है शेर?

यह रहा हमारा शेर, स्वामीजी! पेड़ के पीछे मिला है!
क्या नाम है तुम्हारा?
TANSEN!
तुमने शेर की नकल बहुत अच्छी की।
मैं जंगल के सभी जान-वरों की आवाजों की नकल कर सकता
लड़का शरारती है – किन्तु है प्रतिभावान! यदि इसे उचित शिक्षा मिले तो यह अच्छा गायक बन सकता है।
तानसेन, मुझे अपने पिता जी के पास ले चलो – मैं उनसे मिलना चाहता हूं।

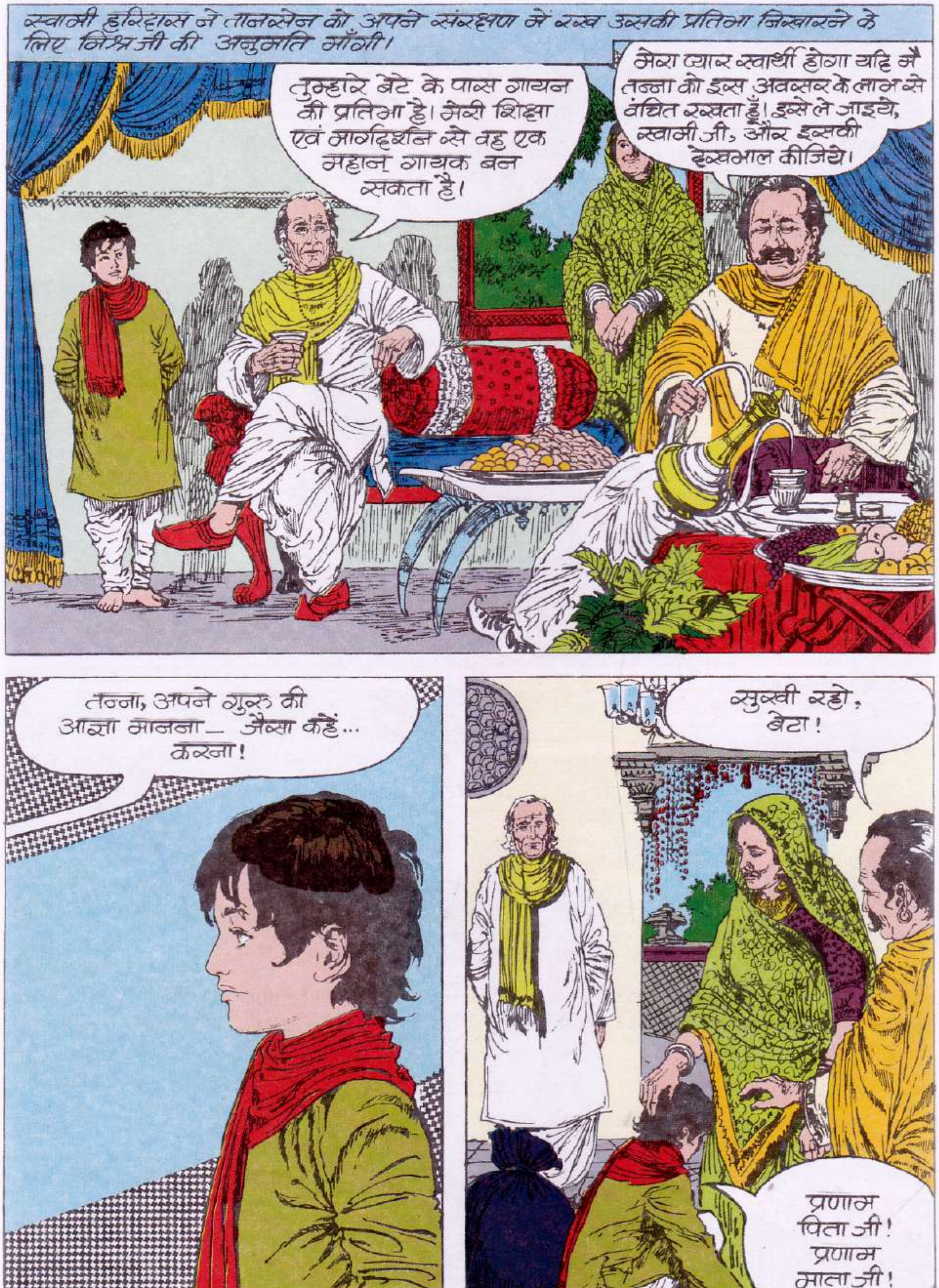
स्वामी हरिदास ने तानसेन को अपने संरक्षण में रख उसकी प्रतिभा निखारने के लिए मिश्र जी की अनुमति माँगी।
तुम्हारे बेटे के पास गायन की प्रतिभा है। मेरी शिक्षा एवं मार्गदर्शन से वह एक महान् गायक बन सकता है।
मेरा प्यार स्वार्थी होगा यदि मैं तन्ना को इस अवसर के लाभ से वंचित रखता हूँ। इसे ले जाइये, स्वामी जी, और इसकी देखभाल कीजिये।
तन्ना, अपने गुरु की आज्ञा मानना — जैसा कहें... करना!
सुखी रहो, बेटा!
प्रणाम पिता जी! प्रणाम माता जी!

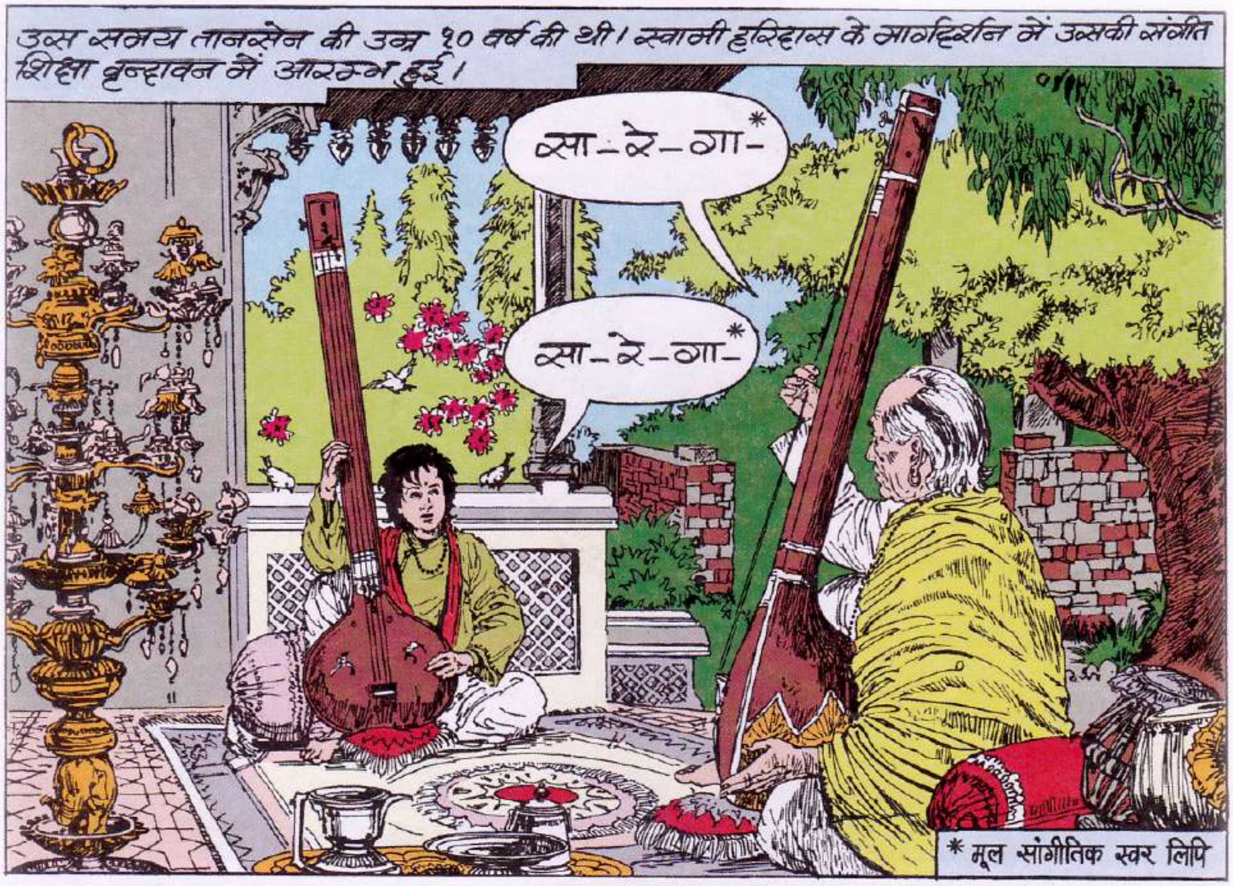
उस समय तानसेन की उम्र १० वर्ष की थी। स्वामी हरिदास के मार्गदर्शन में उसकी संगीत शिक्षा वृन्दावन में आरम्भ हुई।
सा-रे-गा-*
सा-रे-गा-*
* मूल सांगीतिक स्वर लिपि

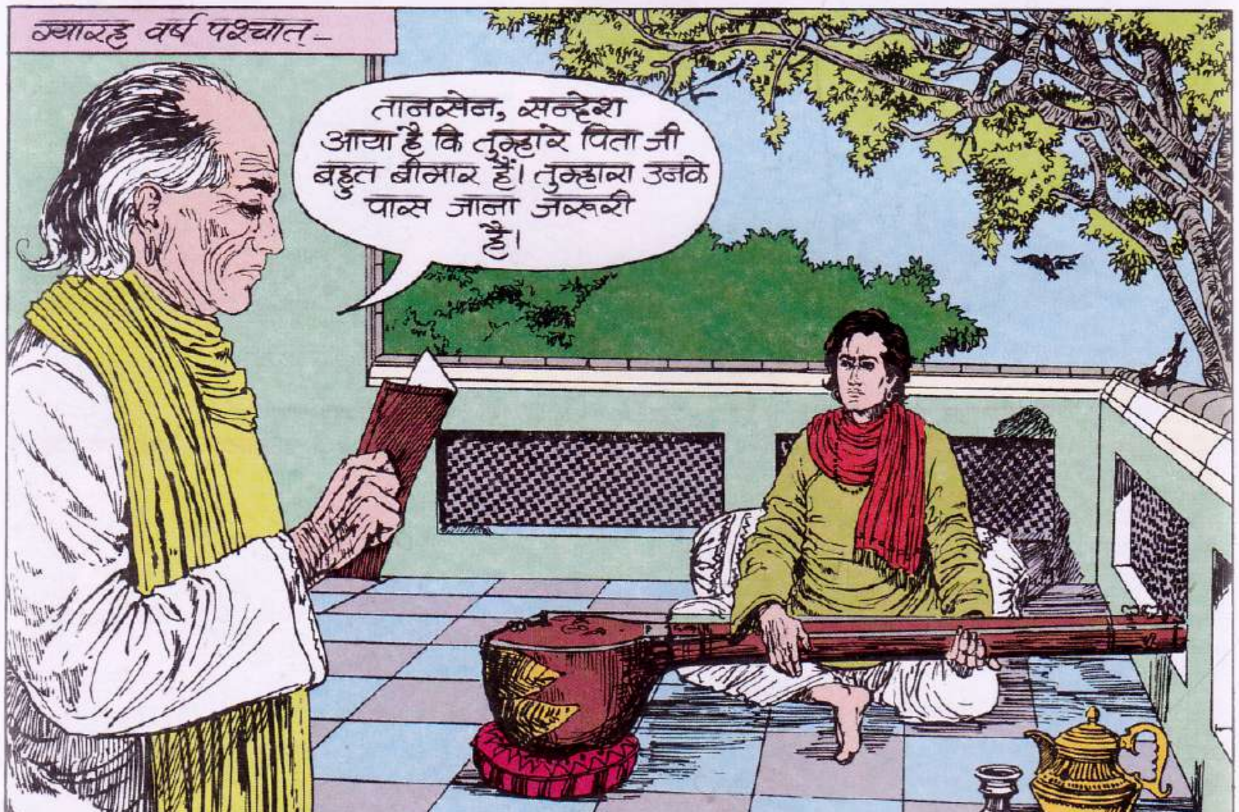
ग्यारह वर्ष पश्चात-
तानसेन, सन्देश आया है कि तुम्हारे पिता जी बहुत बीमार हैं। तुम्हारा उनके पास जाना जरूरी है।

तन्ना, शायद यह मेरा अन्तिम समय है। तुम्हें अपनी कला में पारंगत देख कर मैं बड़े सन्तोष से प्राण त्याग सकता हूँ। बेटा, मोहम्मद गौस के एहसानों को भूलना मत – उनके पास जाना एवं मार्ग-दर्शन जरूर लेना।
जो आज्ञा पिता जी!
पिता की मृत्यु के कुछ समय पश्चात ही उनकी माँ की मृत्यु हो गयी।
अब स्वामी हरिदास एवं मोहम्मद गौस के सिवाय तानसेन का कोई नहीं था।
अलविदा मेरे घर! अलविदा मेरी वनस्थली!
गुरु जी – मैं मोहम्मद गौस के दर्शन के लिए आपकी आज्ञा चाहता हूँ। पिता जी की यह अन्तिम इच्छा थी।
जरूर जाओ, तानसेन! किन्तु याद रखना कि तुम यहाँ कभी भी लौट कर आ सकते हो।

संगीत साधना करते हुए, लगभग दो वर्ष, तानसेन मोहम्मद गौस के साथ रहे। तब तक उनकी कला में पूरी तरह निखार आ गया।
ग्वालियर की रानी मृगनैनी देवी एक अद्वितीय गायिका थीं। तानसेन को उनका गायन सुनने की बहुत इच्छा थी।
मोहम्मद गौस रानी को जानते थे। उन्होंने तानसेन का रानी से परिचय करवाया।
महारानी जी, ये तानसेन हैं।

बाद में_
महारानी जी_ आप बहुत सुन्दर गाती हैं।
मैंने भी आपके बारे में यही सुना है। क्या आप मुझे अपना गायन सुनायेंगे?
तानसेन का गायन सुन रानी बहुत प्रसन्न हुई। वे दोनों एक दूसरे के प्रशंसक बन गये। वे कई बार रानी के यहाँ जाते एवं उनका गायन सुनते।
उसके बाद वहाँ उनका आना-जाना और अधिक हो गया। किन्तु अब रानी की दासी_ हुसैनी के लिए!
पता नहीं_ वह क्या सोचती है?
जैसी दिव्य आवाज, वैसा ही रूप भी दिव्य। लेकिन वे इस तरह मुझे क्यों देखते रहते हैं? किसी तरह उनके मन की बात का पता लग सकता!

तानसेन ने मोहम्मद गौस से विवाह करवाने का निवेदन किया। धर्म परिवर्तन के बाद उनका नाम रखा गया- अता अली खाँ और उनका विवाह हुसैनी के साथ हो गया।
विवाह के पश्चात् -
मुझे गुरु जी से मिले कई वर्ष हो गये। आपकी आज्ञा हो तो हम उनके पास जाकर उनके आशीर्वाद ले आवें।
हाँ-हाँ, बेटा, जरूर जाओ!
गुरु जी!
तुम्हें पुनः यहाँ देख-कर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इसे अपना ही घर समझो एवं जब तक मन चाहे रहो।
हुसैनी भी स्वामी हरिदास की शिष्या बन गयी। दोनों गुरु जी के साथ प्रतिदिन गायन का अभ्यास करने लगे।

एक दिन-
बेटा, मैं बहुत बीमार हूँ। अन्त बहुत निकट है। अन्तिम समय में तुम्हें देखने की बड़ी अभिलाषा है।
तानसेन मोहम्मद गौस के पास पहुँचे तथा रात-दिन उनकी सेवा करने लगे।
मोहम्मद गौस ने अपनी मृत्यु के पश्चात तानसेन को अपने मकान एवं सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया। तानसेन, पत्नी सहित, नये मकान में रहने लगे।
चलिये- खाना तैयार है- आपकी राह देखी जा रही है।

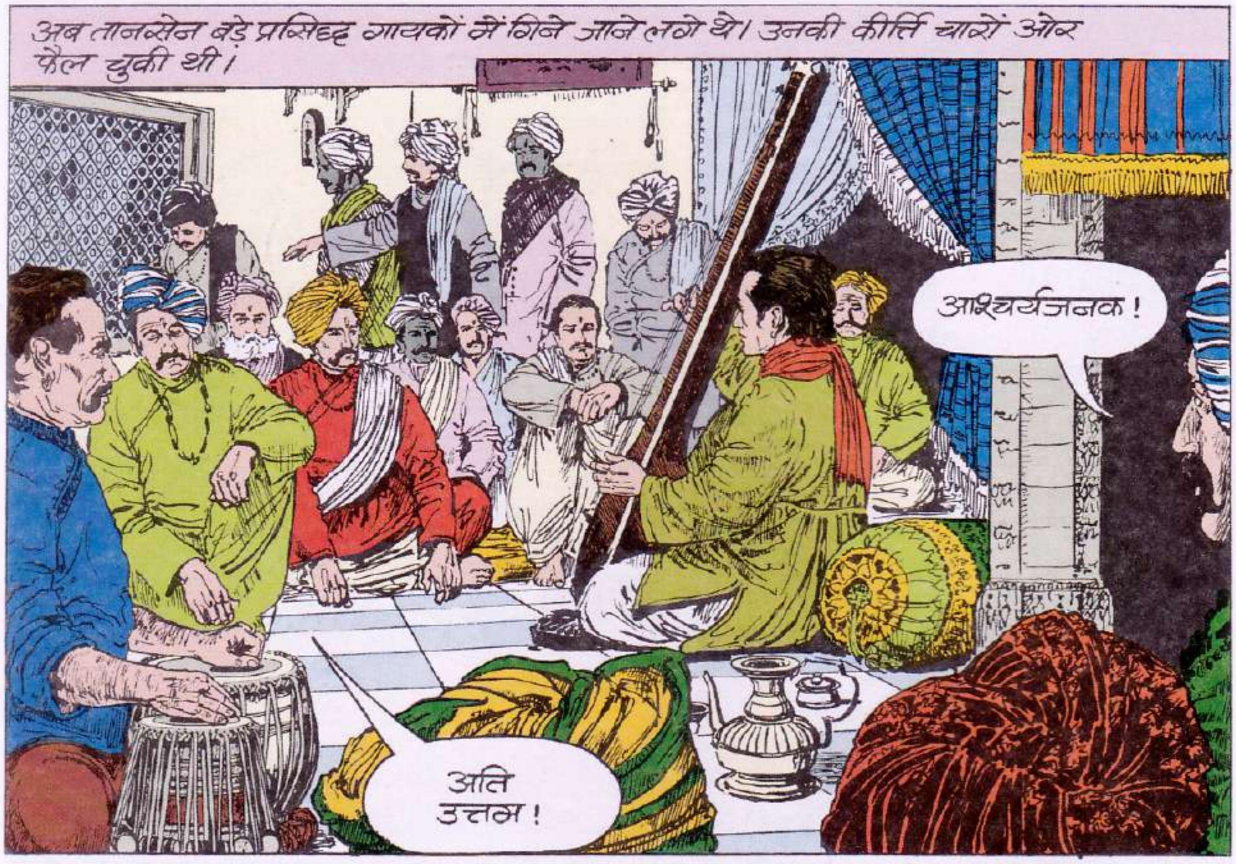
अब तानसेन बड़े प्रसिद्ध गायकों में गिने जाने लगे थे। उनकी कीर्ति चारों ओर फैल चुकी थी।
आश्चर्यजनक!
अति उत्तम!

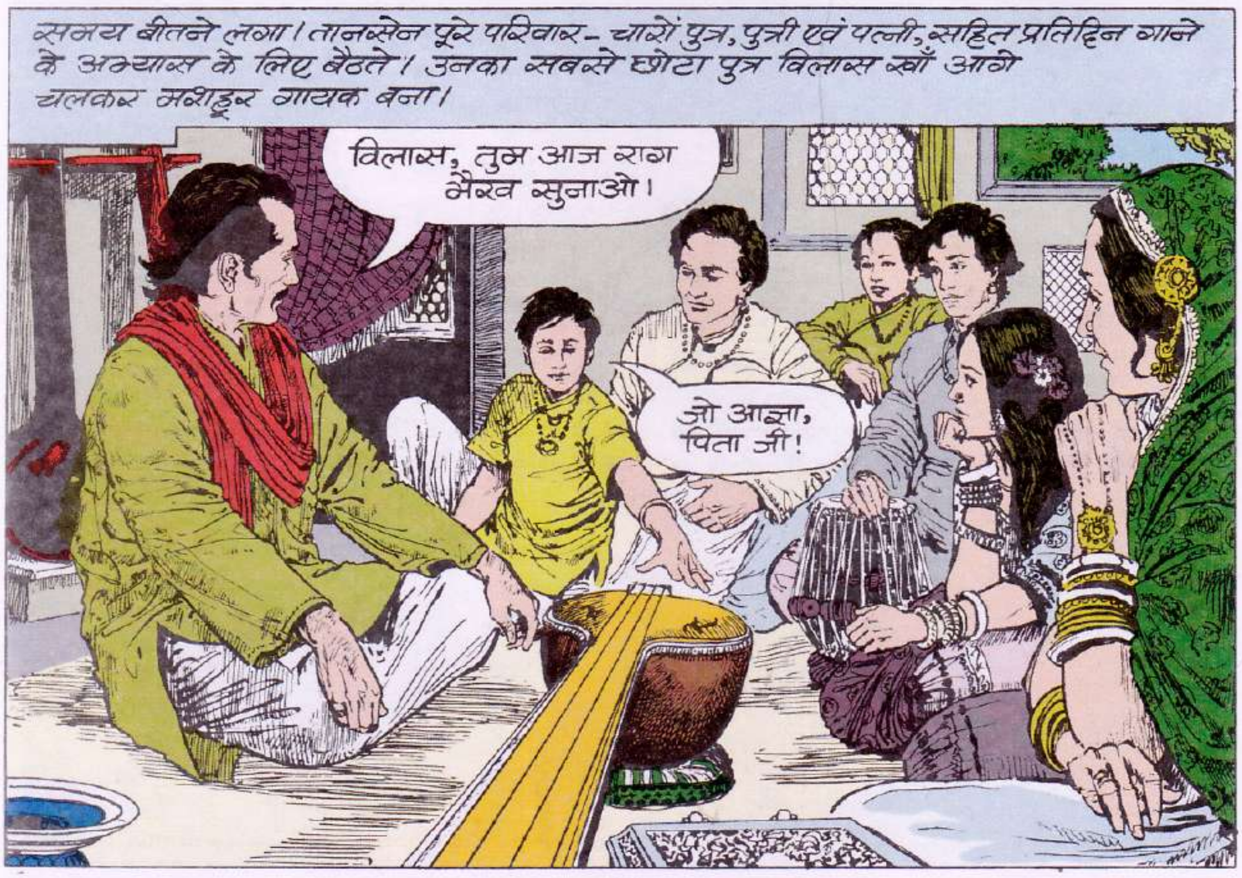
समय बीतने लगा। तानसेन पूरे परिवार- चारों पुत्र, पुत्री एवं पत्नी, सहित प्रतिदिन गाने के अभ्यास के लिए बैठते। उनका सबसे छोटा पुत्र विलास खाँ आगे चलकर मशहूर गायक बना।
विलास, तुम आज राग भैरव सुनाओ।
जो आज्ञा, पिता जी!

उसी समय रीवा के संगीत-प्रेमी महाराज राजाराम ने तानसेन को राजगायक बनने के लिए आमन्त्रित किया।
महाराज से कहना कि मैं इस सम्मान को स्वीकार करता हूँ।
एक दिन राज दरबार में -
तानसेन! मुगलसम्राट अकबर हमारे अतिथि हैं। उनके मनोरंजन के लिए हम तुम्हारा गायन कराना चाहते हैं।
महाराज, इस अवसर पर मैं विशेष राग प्रस्तुत करूँगा।
तानसेन का गायन समाप्त होते ही -
बहुत खूब - शानदार! महाराज, आप भाग्यशाली हैं कि तानसेन जैसा महान गायक आपके पास है। हमारी इच्छा है कि ऐसा ही कोई गायक हमारे दरबार में भी हो।
अकबर को प्रसन्न करने का यह अच्छा अवसर है।
बादशाह सलामत - तानसेन आपके दरबार को विभूषित करेंगे। अपनी अटूट मित्रता के प्रतीक के रूप में मैं तानसेन आपको भेंट करता हूँ!

तानसेन १५५६ में आगरा पहुँचे। और शीघ्र ही वे अकबर के दरबार के नवरत्नों में गिने जाने लगे।
रात के समय अकबर के शयन कक्ष में तानसेन के संगीत के मधुर स्वर गूँजते थे।
और प्रातःकाल अकबर और दरबारियों को जगाने के लिए वे राग तोड़ी या राग भैरव छेड़ते...
सुभान अल्लाह... यह राग तुमने बहुत ही खूब-सूरती से गाया। इसके लिए मेरी यह मोती की अँगूठी लो!

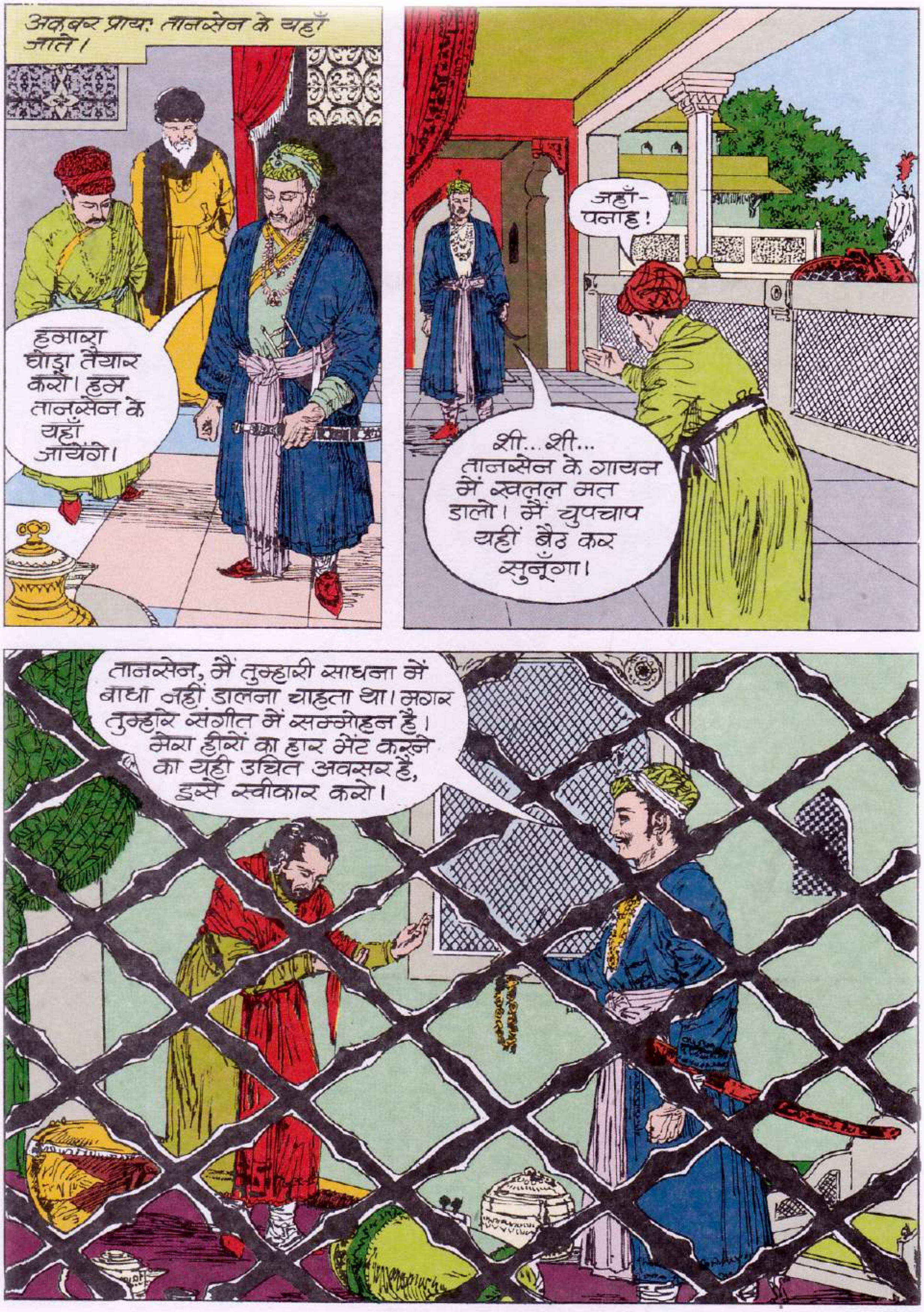
अकबर प्रायः तानसेन के यहाँ जाते।
हमारा घोड़ा तैयार करो। हम तानसेन के यहाँ जायेंगे।
जहाँ-पनाह!
शी... शी... तानसेन के गायन में खलल मत डालो। मैं चुपचाप यहीं बैठ कर सुनूँगा।
तानसेन, मैं तुम्हारी साधना में बाधा नहीं डालना चाहता था। मगर तुम्हारे संगीत में सम्मोहन है। मेरा हीरों का हार भेंट करने का यही उचित अवसर है, इसे स्वीकार करो।

मुझे धन की आवश्यकता थी है जो इस हार से ही मिल सकता है। कल ही मैं इसे जौहरी के पास ले जाऊंगा।
तानसेन से ईर्ष्या रखने वाले कुछ प्रभावशाली दरबारी इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे कि किसी तरह तानसेन के विरुद्ध अकबर के मन में जहर घोला जाये।
सुना आपने– तानसेन ने बादशाह सलामत का दिया हुआ कीमती हार जौहरी को बेच दिया।
हमें अब मौका मिला है!
शौकत मियाँ– अब हमें देर नहीं करनी चाहिए।

उसके बाद-
यह सच है, जहाँपनाह! स्वयं जौहरी ने कहा है।
राजकीय उपहार को इस तरह बेचना अपमान है, हुजूर!
तानसेन को फौरन हाजिर किया जाय।
तानसेन सन्देश मिलते ही दरबार के लिए चल पड़े। उन्हें इस कुचक्र की कोई जानकारी नहीं थी।
क्या बात है, तानसेन, तुम हमारा हीरों का हार नहीं पहने हुए हो!
जहाँपनाह, वह खो गया!
खो गया? जानते हो वह राजकीय उपहार था? अगर शीघ्र ही तुम उसे खोज नहीं सके तो तुम्हारे दरबार में आने पर रोक लगा दी जायेगी।

आखिर शत्रुओं को सफलता मिल ही गयी। अब मैं क्या करूँ? मेरा तो रीवा नरेश के सिवाय कोई मित्र भी नहीं है।
घोड़ा तैयार करो – मैं रीवा जाऊँगा।
रीवा में –
तानसेन – मैं तुम्हें देखकर बहुत प्रसन्न हूँ। कैसे आना हुआ?
श्रीमान्, मैं आपसे मदद माँगने आया हूँ!
तानसेन ने अपना धर्म-संकट कह सुनाया।

बस - यह बात है ? चिन्ता छोड़ो, तानसेन, और कोई अनोखा राग सुनाओ।
तानसेन ने दो असाधारण राग – राग 'शुक्ल बिलावल' और 'मेघ राग' गाये।
तानसेन ने जब गायन समाप्त किया तो सारा दरबार वाह - वाह कर उठा।
बहुत खूब ! तुम्हारा गायन पहले की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ एवं मधुर हो गया है।
तानसेन, ये रत्न-जड़ित पादुकाएँ, प्रशंसा के प्रतीक स्वरूप स्वीकार करो।
इनका मूल्य तो लाखों में होगा।
बहुत भाग्यशाली है, तानसेन!

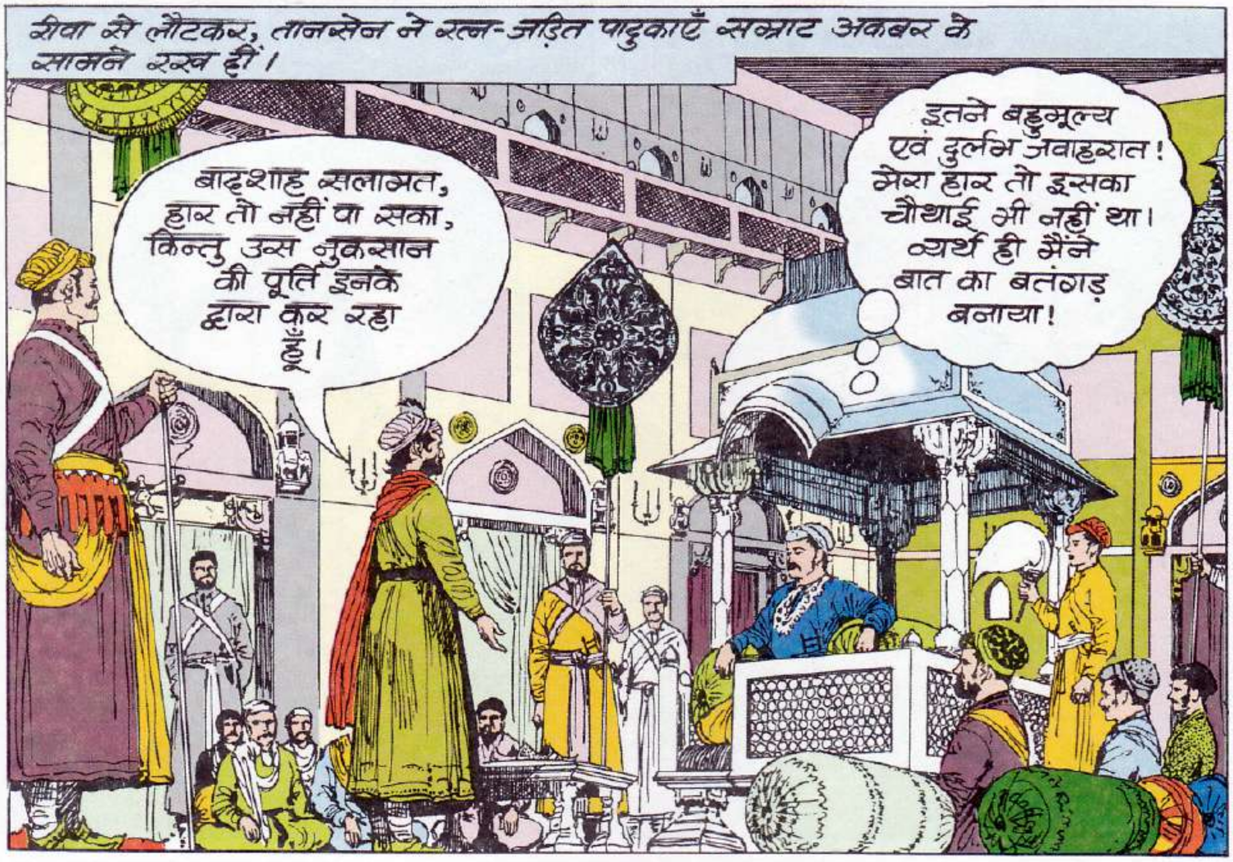
रीवा से लौटकर, तानसेन ने रत्न-जड़ित पादुकाएँ सम्राट अकबर के सामने रख दीं।
बादशाह सलामत, हार तो नहीं पा सका, किन्तु उस नुकसान की पूर्ति इनके द्वारा कर रहा हूँ।
इतने बहुमूल्य एवं दुर्लभ जवाहरात! मेरा हार तो इसका चौथाई भी नहीं था। व्यर्थ ही मैंने बात का बतंगड़ बनाया!

तानसेन, हमसे भूल हुई है। बेशक हार मूल्यवान था–किन्तु तुम्हारे गले से निकले स्वर का तो मूल्य ही नहीं आँका जा सकता! क्षमा करोगे या नहीं?
जहाँपनाह, मुझे शर्मिन्दा मत कीजिये।

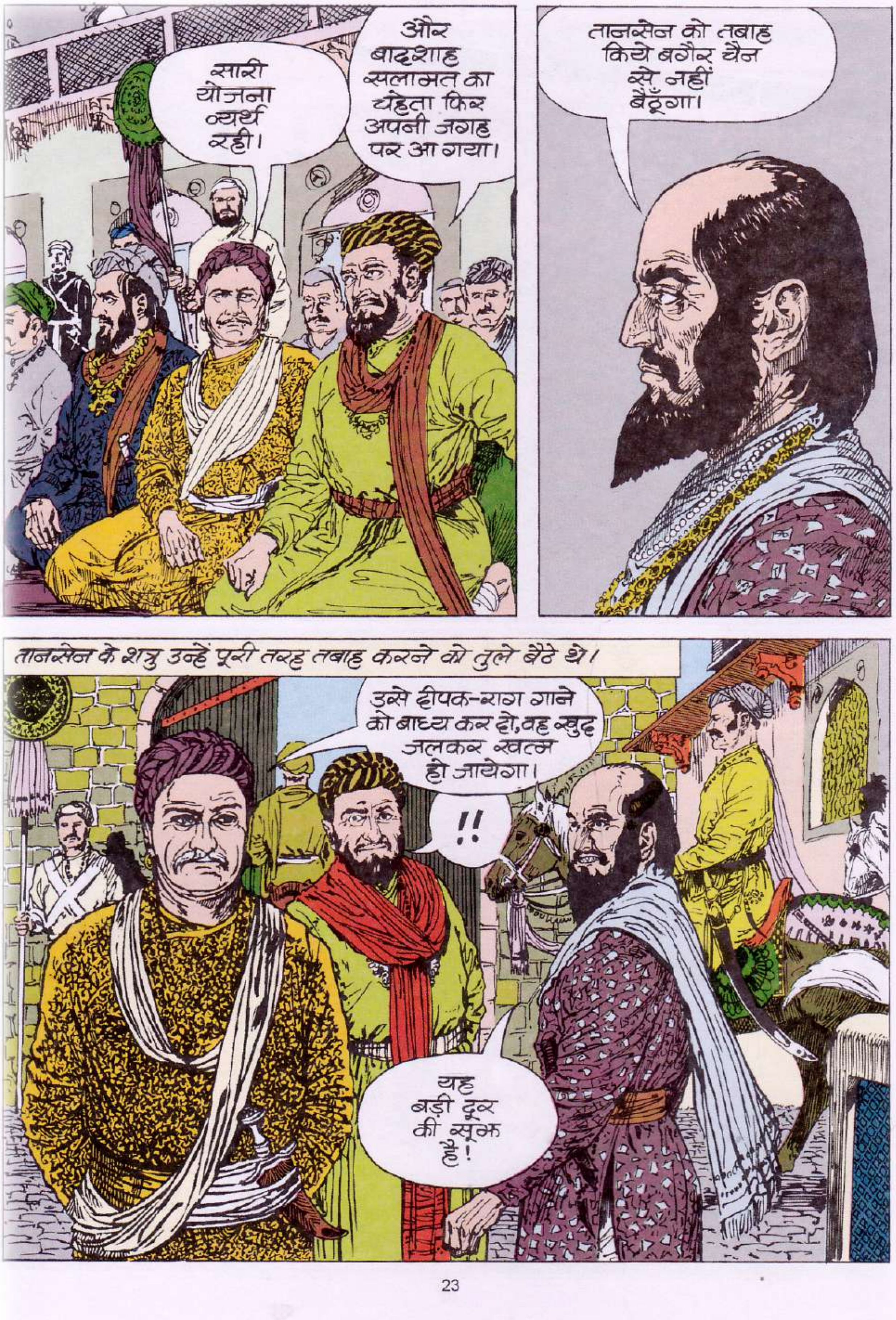
सारी योजना व्यर्थ रही।
और बादशाह सलामत का चहेता फिर अपनी जगह पर आ गया।
तानसेन को तबाह किये बगैर चैन से नहीं बैठूँगा।
तानसेन के शत्रु उन्हें पूरी तरह तबाह करने को तुले बैठे थे।
उसे दीपक-राग गाने को बाध्य कर दो, वह खुद जलकर खत्म हो जायेगा।
!!
यह बड़ी दूर की सूझ है!

अगले दिन, शौकत मियाँ ने तानसेन की प्रतिभा को खुले दरबार में चुनौती दी।
जहाँपनाह! किसी भी गायक की महानता उसके दीपक-राग गाने से आँकी जाती है!
तानसेन महान् हैं। वे इस राग को गायेंगे।
तानसेन, हम दीपक-राग सुनना चाहते हैं!
मगर, हुजूर, उससे...
यह हमारा हुक्म है, तानसेन!
बादशाह सलामत! इसकी तैयारी के लिए मुझे कम से कम दो सप्ताह का समय दीजिये...

अब वह इससे बच नहीं सकता है!!
दीपक-राग के स्वरों की गर्मी से शरीर भस्म हो जाता है। इस बार मैं बच नहीं सकता- राजदरबारी सफल होते दिखाई दे रहे हैं!
घर पर-
मेघराग से वर्षा होती है और गर्मी शान्त होती है। अगर कोई साथ साथ मेघराग गाये तो शायद मैं बचने की आशा कर सकता हूं। पर कौन गायेगा?
शायद मेरी पुत्री सरस्वती एवं स्वामी जी की शिष्या रूपवती यह गा सकती हैं।

तुम्हें दो सप्ताह में मेघराग में पारंगत होना होगा। यही मुझे बचाने का एकमात्र उपाय है।
हम अपनी भरपूर कोशिश करेंगी, पिता जी!
उन दोनों ने तानसेन के कुशल मार्ग-दर्शन में दिन-रात अभ्यास किया-
पन्द्रहवें दिन-
मुझे भरोसा है कि तुम्हें सफलता मिलेगी। पर याद रखो, पूजा के बाद तुरन्त गाना शुरू करना है।
अच्छा, पिता जी!
परमात्मा की तुमपर कृपा हो!

अगली सुबह उद्घोषक ने इस महत्त्वपूर्ण घटना की घोषणा की–
आज तानसेन अकबर के दरबार में दीपक-राग गायेंगे। इस राग के प्रभाव से दीप अपने आप जल उठेंगे।
**
लोग इकट्ठे होकर विस्मित से चर्चा करने लगे। बहुत से लोग दृश्य को देखने महल में जा पहुँचे।
वे कहते हैं कि गायक इस अग्नि-परीक्षा में नष्ट भी हो सकता है।
हाय!!
खचाखच भरे हुए दरबार में तनाव का वातावरण था।

जैसे ही तानसेन ने आलाप शुरू किया वातावरण गर्म होने लगा।
धीरे धीरे लोग पसीने से नहा गये और ठण्डी हवा के एक झोंके की इच्छा महसूस करने लगे।
पेड़ों की पत्तियाँ सूख कर जमीन पर गिरने लगीं।
गाने की लय बढ़ने के साथ पक्षी मर कर गिरने लगे। नदी का पानी उबलने लगा।
तानसेन का शरीर ज्वर से तपने लगा और नेत्र रक्त-वर्ण हो गये।
जगह जगह अग्नि की लपटें उठती देखकर लोग डर कर चिल्लाने लगे और बुझे हुए दीप तेज़ी से जलने लगे।

राग की उष्णता के कारण तानसेन हाँफने लगे।
ओह – वर्षा जल्दी हो! जल-वर्षण कब होगा?
बालिकाएँ उत्तेजित होकर गाने लगीं। आकाश पर बादल छाने लगे।
गर्मी की भयानकता के मुकाबले में गड़गड़ाहट के साथ, झुलसी हुई धरती पर, वर्षा होने लगी। तानसेन वर्षा देखते ही मोहित से बाहर दौड़ पड़े।

तानसेन एक माह तक गंभीर रूप से बीमार रहे।
देखो, मैं जल रहा हूँ। मुझे हर जगह ज्वालाएँ दिखायी दे रही हैं। वर्षा... वर्षा...! कहाँ हूँ मैं??

सम्राट तानसेन की दुर्दशा देखकर बहुत दुखी हुए। वे तानसेन की शय्या के पास बैठकर उनके जल्दी स्वस्थ होने की प्रार्थना करने लगे।
अल्लाह – मेरा तानसेन जीवित रहे। मेरी यह इच्छा पूरी कर दे– मैं ग्यारह दिन तक गरीबों को भोजन कराऊँगा।

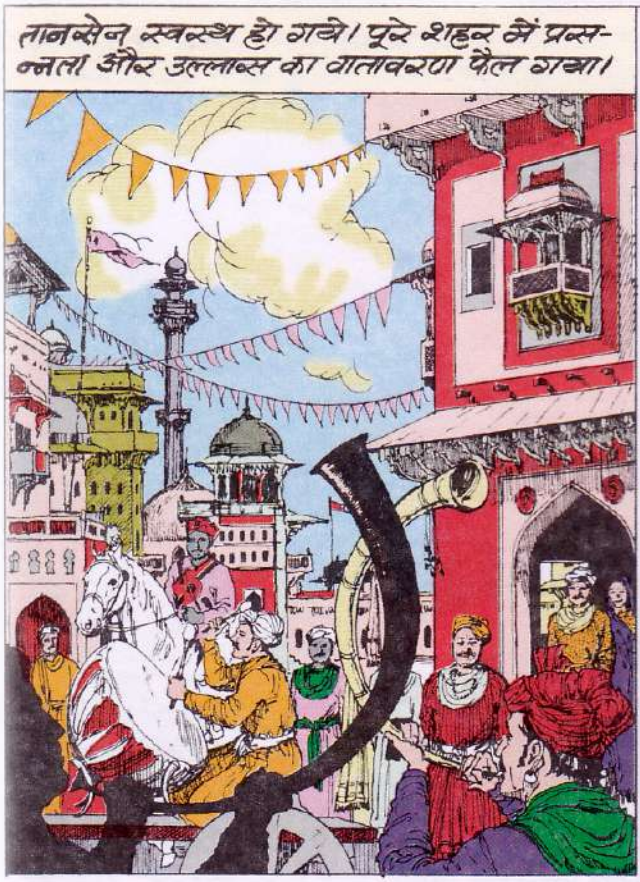
तानसेन स्वस्थ हो गये। पूरे शहर में प्रस-
न्नता और उल्लास का वातावरण फैल गया।

दोषी राजदरबारियों को दण्ड दिया
गया।

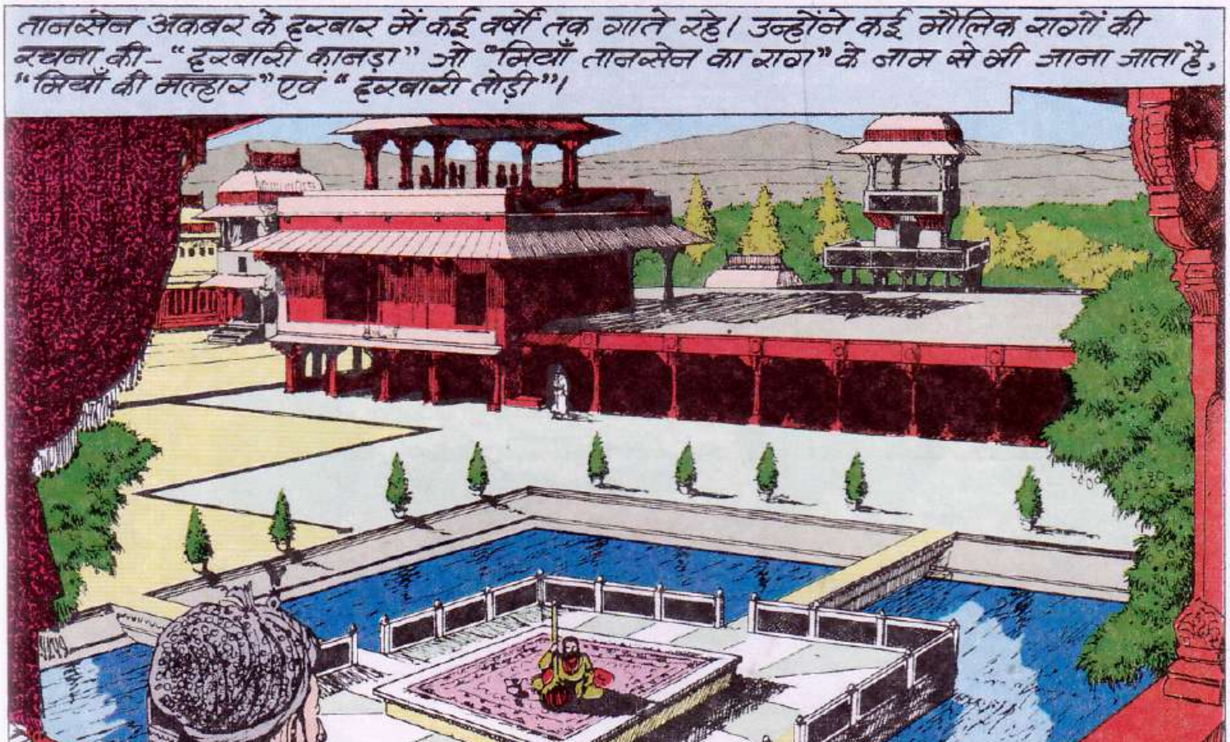
तानसेन अकबर के दरबार में कई वर्षों तक गाते रहे। उन्होंने कई मौलिक रागों की
रचना की– "दरबारी कानड़ा" जो "मियाँ तानसेन का राग" के नाम से भी जाना जाता है,
"मियाँ की मल्हार" एवं "दरबारी तोड़ी"।

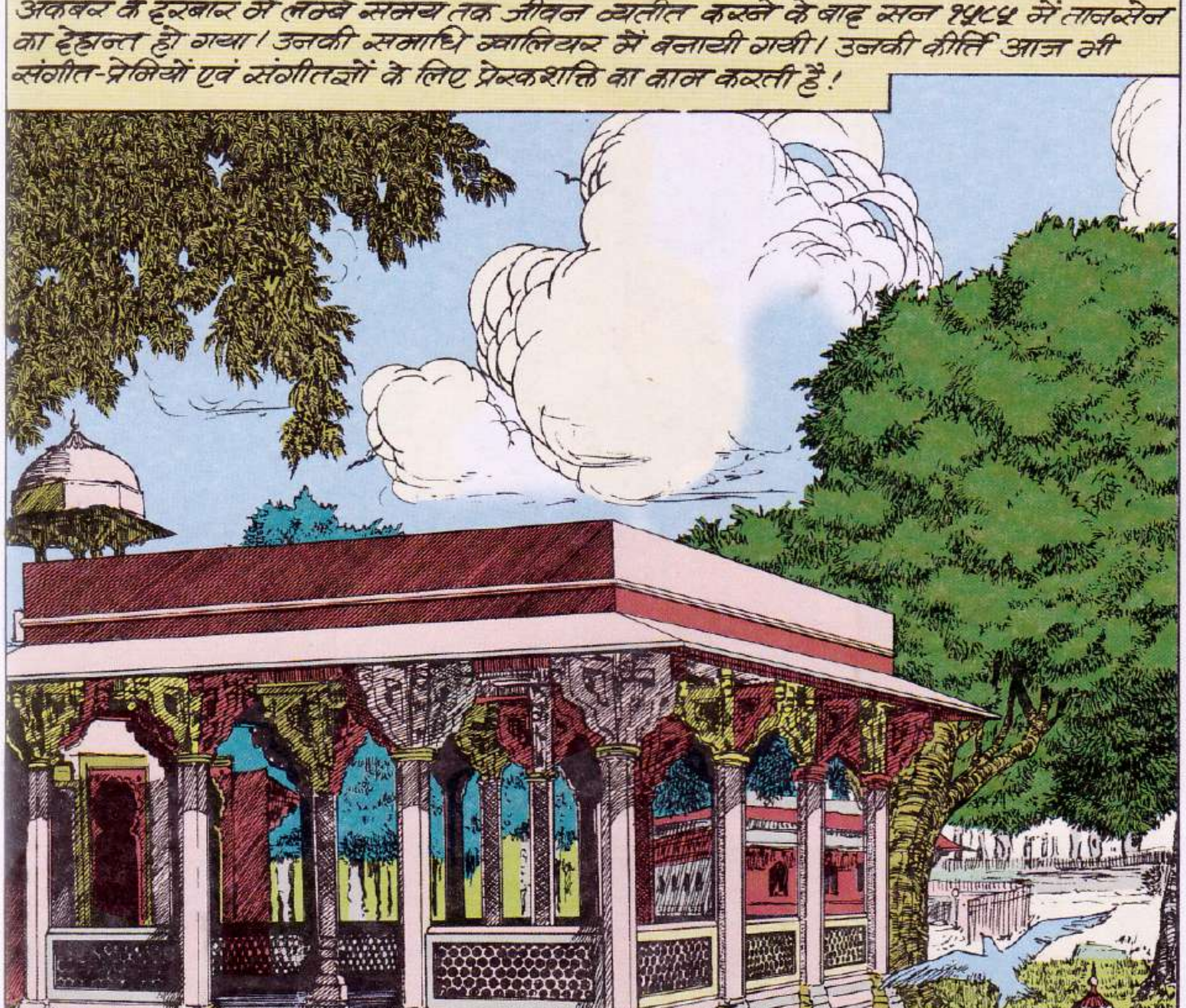
अकबर के दरबार में लम्बे समय तक जीवन व्यतीत करने के बाद सन १५८९ में तानसेन का देहान्त हो गया। उनकी समाधि ग्वालियर में बनायी गयी। उनकी कीर्ति आज भी संगीत-प्रेमियों एवं संगीतज्ञों के लिए प्रेरकशक्ति का काम करती है!

दूरदर्शी

तानसेन

पशु की आवाज़ की नकल करने से लेकर तानसेन की प्रतिभा के साथ एक आग को प्रज्वलित करने के लिए बेजोड़ था। उनकी आवाज़ इतनी मांग में थी कि राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए विली संरक्षक इसका इस्तेमाल करते थे। ऐसी प्रतिभा निष्ठावान दोस्तों और एक सुंदर पत्नी को जीत सकती है, लेकिन यह दूसरों को भी ईर्ष्यापूर्ण बना सकती है। बादशाह अकबर के दरबार में, वह हीरे और मोतियों से अधिक कीमती एक आभूषण था, जो उस पर बरस रहा था, और वह आज भी शास्त्रीय भारतीय संगीत का एक चमकदार प्रतीक है।

अमर चित्र कथा के अन्य दिव्यदृष्टा :

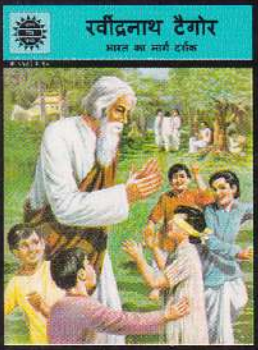

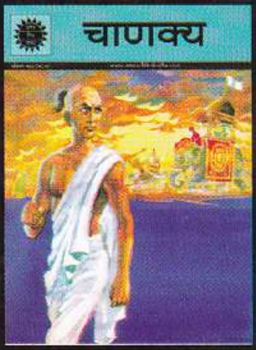

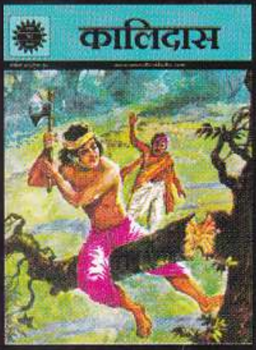

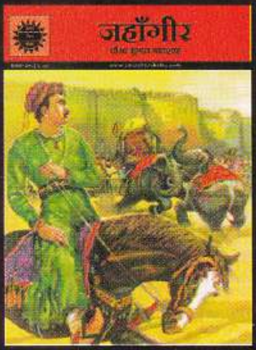

वीरांगना

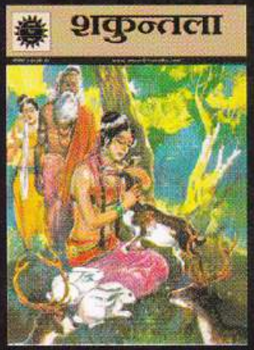

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

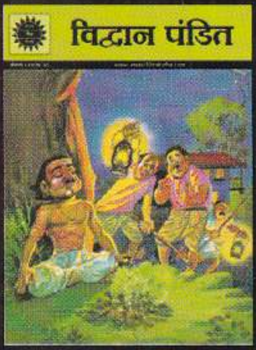

हास-परिहास और दंतकथाएँ

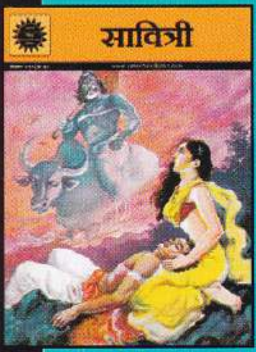

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-70-8

9 789390 055708